Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –9, March 2013
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.org

ORIGINAL ARTICLE

वीर रस के कवि भूषण

सुब्राव नामदेव जाधव

हिंदी विभाग , श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी .

प्रस्तावना

रस की दृष्टि से रीति या श्रृंगार काल में श्रृंगार के बाद वीर- रस का स्थान है। आचार्य शुक्ल भी स्वीकार कर चुके हैं कि- "वास्तव में श्रृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई है।"

प्रस्तुत काल के नामकरण के साथ रीति और श्रृंगार दोनों धाराओं को तो प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ, लेकिन वीर साहित्य को गौण स्थान दिया गया है। इस काल में व्यापक रुप में वीर साहित्य लिखा गया है। उसका अध्ययन उस मात्रा में नहीं हुआ जैसा इस काल के रीति और श्रृंगार साहित्य का हुआ है।

डॉ. भगवानदास तियार ने लिखा है -" रीतिकालीन हिन्दी वीर काव्य की रचनाएँ कश्मीर से महाराष्ट्र तक और बंगाल से गुजरात भुज, कच्छ कालिथावाड तक सारे देश में बिखरी पड़ी हैं। इनका संकलन, अध्ययन, विश्लेषण, वर्गीकरण और मुल्यांकन अत्यन्त श्रमसाध्य, व्ययसाध्य, क्लिष्ट कार्य हैं, अत: रीतिकालीन हिन्दी वीर काव्य का सर्वागीण अध्ययन अद्यानधि नहीं हो पाया है।"

हिन्दी साहित्य का इतिहास इस ग्रंथ मे डॉ. माधव सोनटक्के ने वीर कवियो के संदर्भ मे लिखा है - "यद्यापि इस काल में भी इस धारा के कवियों ने राजायों नवाबों सामतों की झुठी प्रशस्तियाँ लिखी है, लेकिन कुछ ऐसे भी कवि है। जिनकी दृष्टि राष्ट्र के गौरव और उन्नति पर भी थी, जिससे उनका वीर -काव्य विशुध्द और काव्य कहलाने का अधिकारी है।" कवि भूषण वीर रस के प्रमुख कवि कहे जाते हैं। भूषण के जन्म-काल हे सम्बन्ध ने अलग अलग मन है। भूषण की रचनाओं से स्पष्ट होता है कि भूषण छत्रपती शिवाजी महाराज के समकालीन थे। भूषण का जन्म कानपूर जिले के तिकवांपूर गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था।

भूषण के नाम के बार में विद्वानों में अलग- अलग विचारधार दिखाई देती हैं। कुछ विद्वानों ने मनीराम, मुरलीधर, घनश्याम आदि मूल नाम दिये हैं। परंतु कुछ विद्वानों ने इनका मूलनाम 'भूषण' स्विकार किया हैं। एक मत यह भी है कि चित्रकुट के सोळंकी राजा रुद्रशाह के पुत्र हदयराम ने भूषण कों 'कविभूषण' कहकर उनको गौरवान्वित किया हो। आश्रमदाता के रुप में कई नाम दिये जाते हैं। लेकिन साहित्य - सृजन छत्रपती शिवाजी महाराज और छत्रसाल के राजाश्रय में हुआ हैं। हृदयराम सोलंकी, शिवाजी के पौत्र शाहू शिवाजी के सेनापती चिमणाजी रीवाँ नरेश अवधूतसिंह जयपुर नरेश जयसिंह तथा उनके पुत्र रामसिंह, बुंदी नरेश राव बुध्दिसिंह आदि के नाम स्विकार किये जाते हैं।

भूषण के संदर्भ में कुछ इतिहासकारों ने स्पष्ट किया है। भूषण वीर रस के कवि थे। साथ ही साथ राष्ट्रभक्त और स्वाभिमानी भी थे। डॉ. माधव सोनटक्के ने लिखा है अन्य रीतिकालीन कवियों के समान धन प्राप्ति के लिए चापलुसी प्रधान काव्य रचना करनेवाली न तो उनमें प्रवृत्ति थी और न उन्होंने वैसा प्रयास किया है। एक तरह से अपनी वीरोपासक प्रतिभा के सच्चे प्रेरक व्यक्तित्व की खोज में कई दरबारों में गये लेकिन अपने अनुरुप आश्रयदाता के रुप मे उनें छत्रपति शिवाजी और महाराज छत्रसाल ही लगे" वीर रस के कवि भूषण द्वारा लिखे ग्रंथो की संख्या कुल ६ बताई जाती है. शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्हास, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक आदि। कहाँ जाता है कि भूषण हजारा, भूषण उल्हास और दूषण उल्हास अप्रास्थ है।

भूषण के ग्रंथों में वीर रस की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। अंधकार के युग में राष्ट्रीयता स्वाभिमान और आजादी की ज्योति ये दो व्यक्तित्व ही रहे हैं। उनमें से भी छत्रपति शिवाजी का व्यक्तित्व अधिक प्रकाशमान है। भूषण का उद्देश्य यहाँ लक्षण- ग्रंथ लिखना नहीं हैं, उस बहाने अपनी वीर एस की प्रतिभा का आविष्कार करना है। इस ग्रंथ में लिखित छंदों के भीतर शिवाजी और वंश परिचय के साथ उनके जीवन से सम्बधित प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया हैं। 'शिवाबावनी' में शिवाजी और साहुजी की प्रशस्ति के बावन छंदों का सकलन है। इन छंदों की भाषा वीररस के उपयुक्त चारण-भाटों सी है।

'छत्रसाल दशक' मे दस छंदों में महाराज छत्रसाल बुन्देला का गुणगान किया गया है। 'शिवभूषण' या 'शिवराज भूषण'शेष उनकी वीर श्रृंगार रसों से समान्वित रचनाएँ हैं। भूषण की वीर भावना कृत्रिम नहीं है और न ही अन्य अनेक कवियों की भाँति उनकी प्रशस्तियाँ ही झुठी हैं। आचार्य शुक्ल ने लिखा है। "भूषण ने जिन दोन नामकों की कृति को अपने वीर काव्य का विषय बनाया था। वे अन्याय दमन में तत्पर, हिन्दु धर्म के संरक्षक दो इतिहास प्रसिध्द वीर थे। उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दु जनता के हदय में उस समय भी थी और आग भी बराबर बनी रही या बढती गयी। इसी से भूषण के वीर रस के उद्गार सारी जनता के हृदय की सम्पति हुए। भूषण की कविता कवि कीर्ति सम्बधी एक अविचल सत्य का दृष्टान्त है। जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी जब तक स्वीकृति बनी रहेगी। भूषण का वीर साहित्य इतिहास और काव्य अपूर्व संगम है।"

कवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता पराक्रम गाथा में ऐतिहासिक सत्य को कायम रखा गया है। कही- कही अतिशयोकि पूर्ण शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। लेकिन वह शैली के उपादान है, उस शेली मे चाटुकारिता का भाव नहीं, राष्ट्रीयता का ओज है, स्वधर्म, स्वदेश, के उध्दारक के प्रति भक्ति-भाव है जैसे इ

इंद्र जिमि जृंभ पर बाड़व सुअंभ पर रावन सदम्थ पर रघुकुळ राज है।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्त्रबाहु पर रात्र द्विजराज है।
दावा द्रुत्र दंड पर, चीता मृग झुंड पर, भूषण बितुडं पर जैसे मृगराज है।
तेज तम पर, कान्हजिमि कंस पर, त्यों म्लेछवंश पर शेर शिवराज है।

संक्षेप मे हम कह सकते है कि भूषण रीति या श्रृंगार कालीन एक श्रेष्ठ कवि है। राष्ट्रीयता, वीरता और साहसिकता के सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति के वीर रस के कवि थे।

संदर्भ :-

१) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. माधव सोनटक्के
२) हिन्दी साहित्य इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल